सम्पादकीय

पाँच जून को पूरी दुनिया में पर्यावरण दिवस मनाया गया। अधिक से अधिक पौधे लगाने का भी संदेश दिया गया । यह ठीक है कि हर वर्ष करोड़ों की संख्या में पौधें लगाए जा रहे हैं जो कि प्रशंसा के योग्य हैं लेकिन पर्यावरण संरक्षण के विकास के साथ–साथ मनुष्य की जीवन शैली पर भी गंभीर चिंतन करना होगा आज अपने–आप में जनसंख्या में हो रही वृध्दि भी एक बड़ी समस्या है। जब पाँच जून को देश भर में पर्यावरण दिवस मनाया जा रहा था तब पहाड़ी प्रदेशों में इस बार आए लाखों सैलानियों के साधनों से ट्रैफिक प्रबंध बिगड़े हुए थे।

शिमला, सोलन, चायल, मनाली, देहरादून, नैनीताल सहित अन्य सर–सपाटों की सड़कों पर वाहनों की कतारों से लगे जाम, वायु प्रदूषण में हो रही वृध्दि का सबूत पेश कर रहे थे सैलानियों की इतनी बड़ी संख्या भी अपने आप में बहुत बड़ी समस्या है। लेकिन, दूसरी तरफ पहाड़ी प्रदेशों की आर्थिकता की रीढ़, पर्यटन ही है। पर्यटन रुकने से करोड़ों लोगों की रोजी–रोटी का मामला खड़ा हो सकता है। पर्यटन रोका नहीं जा सकता परंतु नियमित किया जा सकता है। इसलिए सार्वजनिक यातायात का प्रबंध उत्तम और आधुनिक हो तो लोग निजी गाड़ियों का प्रयोग करने से परहेज करेंगे।

इसी संदर्भ में हमारे विद्यालय के प्राचार्य महोदय के आदेशानुसार समस्त छात्रों, कर्मचारियों और अध्यापकों ने भी वन्य विभाग द्वारा प्रदत्त की गई सेवाओं का लाभ लेते हुए, पर्यावरण दिवस के प्रति जागरूकता और स्वच्छता बढ़ाने के लिए अनेक प्रयास किए गए। मैं समझता हूँ कि यदि पर्यावरण स्वच्छ होगा तभी मनुष्य जिदंगी का अस्तित्व बच सकेगा और इस प्रकार की गतिविधियाँ पाँच जून को ही नहीं बल्कि साल में कम से कम 01 मई, 15 अगस्त, 02 अक्तूबर, 31 अक्तूबर तथा 14 नवबंर की तारीखों में भी मनानी चाहिए।

विद्यालय के आरंभ सत्र में ही नए प्राचार्य श्री वी. के. गंगवाल जैन जी ने अपना कार्यभार संभालाते ही सभी संकायों के प्रति अपने आदेशानुसार अनुशासन बनाए रखने और अध्यापन कार्यों में उन्नति लाने पर जोर दिया तथा आज प्रायार्य महोदय के निर्देशन में विद्यालय दिन दौगुनी और रात चौगुनी के पथ पर अग्रसर है।

मारुती अशोक खापरे
हिन्दी विभागाध्यक्ष

'चरित्र ही सर्वोच्च आभूषण है'

जैसा कि आप जानते हैं, यह राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल का आदर्श वाक्य है।'' शीलं परं भूषणम्'' वस्तुतः यह श्लोक भर्तृहरि कृत नीतिशतक के अध्याय ''धैर्यपद्धतिः'' का अस्सीवाँ श्लोक है। और इस श्लोक का अर्थ क्या है, यह सब हम व्याख्या के माध्यम से जानने का प्रयत्न करेगें। जैसा कि कहा गयाः–

ऐश्वर्यस्य विभूषणं सुजनता शौर्यस्य वाक्संयमो
ज्ञानस्योपशमः श्रुतस्य विनयो वित्तस्य पात्रे व्ययः।
अक्रोधस्तपसः क्षमा प्रभवितुर्धर्मस्य निर्व्याजता
सर्वेषामपि सर्वकारणमिदं शीलं परं भूषणम।। नीतिशतकम् – 80

अर्थात् ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता, शूरता का भूषण अभिमान रहित बात करना, ज्ञान का भूषण शान्ति, विद्या का भूषण विनय, धन का भूषण सुपात्र को दान देना, तप का भूषण क्रोधहीनता, समर्थ का भूषण क्षमा और धर्म का भूषण दिखावा या पाखण्ड ना करना है। फिर भी इन सब गुणों का कारण और सर्वोत्तम भूषण 'शील' है। जो व्यक्ति सदाचारी हो और उसके अन्दर कोई दूसरा गुण न भी हो तो भी वह व्यक्ति सबसे श्रेष्ठ है, सबसे अच्छा है। कारण यह है कि सदाचारी, चरित्रवान व्यक्ति कभी गलत काम कर ही नहीं सकता।

और प्रस्तुत इस श्लोक में हमारे लिए यही उपदेश है, कि हमें इसे सदैव सदाचार की अनुपालना करनी चाहिए । ताकि हमारे व्यवहार और आचरण में पवित्रता आ जाए। हमारी भारतीय संस्कृति भी सदाचार की बात अलग ढंग से करती है। और यही कारण है कि हमारी भारतीय संस्कृति एक नैतिक संस्कृति है। यहाँ आचरण दो प्रकार के हैंः बुरा आचरण और अच्छा आचरण। सदाचारी आचरण ही सदाचार कहलाता है। सदाचार धर्मी और विद्वान का आचरण है। सदाचारी लोग अपनी इंद्रियों को वश में कर लेते हैं और सभी के साथ शिष्टाचार युक्त व्यवहार करते हैं। वे सत्य बोलते हैं और अपने माता, पिता, गुरु, और बड़ों का आदर करते हैं। वे उनकी आज्ञा का पालन करते हैं और अच्छे कार्यों में संलग्न रहते हैं।

इसलिए व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए सद्गुण आवश्यक है। सदाचार का अभ्यास बचपन से ही शुरू हो जाता है। सदाचार से मनुष्य सदाचारी, विनम्र, और बुद्धिमान बनता है। इसी कारण संसार में सदाचार का महत्व सर्वोपरि है। जो लोग गुणवान होते हैं उनका हर जगह सम्मान होता है। जिस देश के लोग सदाचारी होंगे, उस देश में हर जगह समृद्धि होगी। इसीलिए महर्षि मनु कहते हैं,''आचारः परमो धर्मः ''आचरण ही परम धर्म है। एक सदाचारी व्यक्ति दूसरे पुरुष की पत्नी को अपनी माँ के रूप में, दूसरे पुरुषों की संपत्ति को पत्थर समान और सभी प्राणियों को अपने बान्धवों की दृष्टि से देखता है।

सदाचार सभी के लिए लाभकारी है। सद्गुणों से मनुष्य प्रसिद्धि प्राप्त करता है। सदाचारी व्यक्ति प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त करता है। जिस प्रकार श्री राम अपने सदाचार से मर्यादा पुरूषोत्तम बने। सद्गुणों से रहित व्यक्ति पशु के समान माना जाता है। अतः सदाचारी मनुष्य का हर जगह सम्मान होता है। इस दृष्टि में जीवन यापन हेतु सद्गुण आवश्यक है। लोगों को कभी भी सद्गुण नहीं छोड़ना चाहिए। सद्गुण से प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। हम सभी को अपना जीवन सदाचार के लिए समर्पित करना चाहिए। सदाचार से पृथक आचरण अकरणीय आचरण है। इसीलिए शास्त्रों में सदाचार की प्रशंसा की गई है। सद्गुण में सभी गुणों का समावेश है। इसमें संयम, इन्द्रिय निग्रह ,तथा अन्य बातों में सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अच्छे कर्मों की वृत्ति तथा बुरे कर्मों की वृत्ति की प्रधानता से प्रशंसा की जाती है। इसीलिए कहा जाता है कि सदाचार ही धर्म है।

इस सन्दर्भ में मनु कहते हैंः जैसा–

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षात् धर्मस्य लक्षणम्।। मनुस्मृति 2/12
यस्मिन् देशे यः आचारः पारम्पर्यक्रमागतः ।
वर्णानां सान्तरालानां स सदाचार उच्यते।। मनुस्मृति–2/18
आचाराद् विच्युतो विप्रो न वेदफलमश्नुते।
आचारेण तु संयुक्तः सम्पूर्णफलभाग् भवेत्।। मनुस्मृति –1/109

वेद भी आचरण और ब्रह्मचर्य के महत्व का वर्णन करते हुए कहते हैं कि ब्रह्मचर्य से ही देवताओं ने मृत्यु पर विजय प्राप्त की। इंद्र ने भी अपने ब्रह्मचर्य के बल पर देवताओं को शांति प्रदान की। सद्गुण की शिक्षा, विनम्रता का अधिग्रहण, धैर्य, इत्यादि हमें शारीरिक, बौद्धिक तथा मानसिक उन्नति प्रदान करते हैं । इसलिए यह मानवेकता बनाए रखता है। अतः अथर्ववेद आचरण और ब्रह्मचर्य के महत्व की पुष्टि करते हुए कहता हैः–

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वराभरत्।। अथर्ववेद–11–5/19

इस प्रकार जीवन में सदाचार ही अच्छे गुणों को प्राप्त करने का एकमात्र साधन है। इस तरह जहाँ सद्गुण है, वहीं धर्म, सत्य, वैभव और शक्ति का वास होता है। सदाचारी के लिए संसार में कुछ भी असंभव नहीं है। चरित्र सभी गुणों का आधार है। यहाँ तक कि पुण्य द्वारा तीनों लोकों को भी जीता जा सकता है। महाभारत में भी कहा गया हैः

शीलेन हि त्रयो लोकाः शक्या जेतुं न संशयः।
नहि किञ्चिदसाध्यं वै लोके शीलवतां भवेत्।। महाभारत शान्तिपर्व –12/124

इसी संदर्भ में महात्मा बुद्ध भी सदाचार की महिमा प्रतिपादन करते हुए कहते है कि, सदाचारी, इंद्रियों पर विजय पाने वाले और पूर्ण ज्ञानी का मार्ग इच्छाओं से भी नहीं रोका जा सकता है। जैसा कि कहा गया हैः –

चन्दनं, तगरं , वापि उप्पलं अथ वस्सिकी।
एतेसं गन्धजातानं शीलगन्धो अनुत्तरो।। धम्मपद –4/12
तेसं सम्पन्नसीलानं अप्पमादविहारिनम्।
सम्मदञ्ञादिविमुत्तानं मारो मग्गं न विन्दन्ति।। धम्मपद– 4/14

इस प्रकार यह सिद्ध है कि आचरण ही समस्त उन्नति का साधन एवं परम धर्म है। संत कहते हैं कि आचरण ही परम धर्म है। इसी कारण सभी गुणों में सद्गुण समाहित हैं। जिस कारण से सदाचार ही सर्वोच्च आभूषण है। अतः हमें सदाचार को जीवन में अपनाना चाहिए ।

निशेश तोमर
सहायक संस्कृत अध्यापक

विद्यार्थी और अनुशासन

एक सच्चे विद्यार्थी की पहचान उसके अनुशासन से हो जाती है। विद्यार्थी सबसे पहले गुण और अनुशासन अपने माता–पिता से सीखता हैं। अनुशासन विद्यार्थी के जीवन का अति महत्त्वपूर्ण अंग है। अनुशासन मतलब शासन के पीछे चलना और शासन के अनुसार जीवन जीना, अनुशासन दो प्रकार के होते है– बाह्य अनुशासन और आत्मानुशासन। जब हम कानून या दण्ड के भय से अनुशासन में रहते है, तो उसे बाह्य अनुशासन कहते हैं। जब हम अपनी स्वयं की इच्छा से अनुशासन में रहते है, तो उसे आत्मानुशासन कहते हैं। एक विद्यार्थी अनुशासनहीन हो जाता है, तो वह कुछ समस्याओं में फँस जाता है, जैसे की वह अपने समाज में घुल–मिल जाता है, तो वह गलत संगति से गलत गुण सीखने के कारण विद्यार्थी अनुशासन में नहीं रहता, क्योंकि जब हमारे माता–पिता हमें समय से पहले छूट दें देंगे और गुण और आदर नहीं सिखाएँगे, ऐसी समस्याएँ अधिकतर उनकी होती है, जिनके पिताजी बस कमाने पर ध्यान देते हैं, और बच्चों पर ध्यान नहीं देते हैं। जब विद्यार्थी समाज में जाएगा तो अच्छे और बुरे सभी प्रकार के लोग मिलेंगे, तो उसी समय पर हम गुण और अनुशासन सीखते है।

हम हमारे माता–पिता की निगरानी में होंगे तो हमारे माता– पिता सदैव हमें अच्छे गुण और आदर व अनुशासन में रहना सिखाएँगे। हमारे माता–पिता को सदैव यह चिंता रहती है कि हमारी संतान गलत समाज में ना जाएँ, अपनी पूरे जीवन की कमाई हमारी पढ़ाई और हमारे सभी कार्यों में लगा देते हैं। मन– ही मन सोचते हैं कि मेरा बेटा बड़ा होकर मेरा नाम रोशन करेगा, लेकिन अगर बच्चा गलत संगति में पड़ गया, तो ना ही वह अनुशासन में रहेगा और हमेशा पैसों को गलत जगह पर खर्च करता रहेगा। विद्यार्थी को अनुशासन में रहना चाहिए ओर माता–पिता को अपने बच्चों पर ध्यान रखना चाहिए। पहले बच्चों को गुरुकुल में रखा जाता था। लेकिन आज इस नए जीवन में विद्यार्थी गलत संगति में पड़ जाता है। कारण यह है कि आज–कल के माता–पिता को सिर्फ कमाने से मतलब है। अपने बच्चों से मतलब नहीं रखते है। तब भी तो विद्यार्थी भी अपनी मस्ती में रहने के कारण आदर, गुण भूल जाता हैद्य अपने अभिभावक की कमाई से अयाशी, और रुपयों का गलत इस्तेमाल करते हैं जब समय गुजर जाता है, जब माता–पिता को पता चलता है कि उनक बेटा बिगड़ चुका है। हमें हमेशा अच्छे गुणों को अपनाना चाहिए। लोगों का आदर करना, दूसरों का सम्मान करना, छोटों को आदर से बात करना आदि।

अपने माता–पिता को अँधेरे में नहीं रखना चाहिए। अगर हम अच्छे से पढ़ेंगे तो हमारे माता–पिता व हमारा भी नाम होगा, और हमारे पड़ोसी भी हमारी तारीफ करेंगे तो हमें अच्छा लगेगा। इसलिए आज के युग में अनुशासन को पालन करना हमारा कर्तव्य हैं।

कैडेट– 4283 यश बाटी
कक्षा– नवीं नालंदा सदन
(अंतर सदनीय कनिष्ठ वर्गीय
हिंदी निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान)

भारतीय संस्कृति का अनोखा स्वरूप

संस्कृति मनुष्यों और उसकी कृतियों के प्रमाण के अंग और स्वभाव का स्वरूप है। भारतीय संस्कृति खुद में ही एक विशाल और प्राचीन संस्कृति हैं। भारतीय संस्कृति के पाँच अंग हैं। ये अंग इस प्रकार हैं। धर्म, दर्शन, संस्कार, इतिहास और वर्ण। इन्हीं पाँच अंगों से भारत के साम्राज्य की स्थापना हुई हैं। हमारी संस्कृति अन्य सभी संस्कृतियों की जननी है। इतिहासकारों का मानना हैं कि भारतीय संस्कृति सबसे प्राचीन एवं दैवीय संस्कृति हैं। भारतीय संस्कृति अन्य संस्कृतियों का सम्मान, गुरुओं को आदर और छोटों को स्नेह देना ही सीखाती हैं। हमारा देश विविधताओं का देश है। हमारे देश में अनेक प्रकार की भाषाएँ, खान–पान और पहनावा हैं, परन्तु इसके बावजूद प्रत्येक व्यक्ति की विचारधारा समान न रहने के कारण भी यह संस्कृति एक है। व्यक्ति अपने कूल की मर्यादा को बचाने हेतु मर– मिटने को भी तैयार होते हैं। यह हमारी संस्कृति की महानता है कि हम इस विचारधारा में जन्में हैं।

मध्यकाल में हमारी संस्कृति के ऊपर अनेक अड़चने आई, परन्तु हमारी संस्कृति ने अपना मूल तत्व का त्याग कभी नहीं किया। हमारी संस्कृति हमें दूसरों के प्रति उदारता और सहिष्णुता का भाव अर्जित करना सीखाती है। इस विचारधारा पर एक श्लोक ऋगवेद में इस प्रकार अंकित हैं।

''एकं सद् प्रिया वहति सन्तिद्य''

अर्थात् शक्ति एक है, परंतु इसके रूप भिन्न–भिन्न प्रकार के हैं। मध्यकाल में सम्राट अशोक ने हमारी संस्कृति से प्रभावित होकर शांति एवं प्रियता का मार्ग अपनाया था। कुषाण वंश के संस्थापक 'कनिष्क' ने भी अपने सिक्कों पर ईश्वर के चित्र अंकित कर दूसरे देशों में प्रचार किया था। हमारी संस्कृति के विपरीत जिसने भी सोचा, उनका सर्वनाश हुआ। पुर्तगालियों के मन में हमारी संस्कृति के प्रति कपट की भावना थी। वे हमेशा अपने पास 'क्रास' तलवार रखते थे। इसलिए पुर्तगालियों के सम्राज्य का विनाश हो गया। अंग्रेजों ने कभी भी हमारी संस्कृति को हानि नहीं पहुँचाई, इन्होंने हमारी संस्कृति को अपनाया और उसकी सराहना की, और हमेशा के लिए भारत में बस गए। इन्हें एंग्लो इंडियन के नाम से जाना जाता है। इन्हें हमारे समाज में इज्जत की नजरों से देखा जाता है। हमारे संविधान ने इन्हें कुछ विशेष अधिकार भी दिए हैं। मुसलमानों के आगमन के बाद हमारी संस्कृति में लहर दौड़ गई। मुस्लिम सम्राटों ने बलपूर्वक हमारी संस्कृति को नुकसान पहुँचाया। अपितु अंत में विजय हमेशा सच और निष्ठा की होती हैं। औरंगजेब जैसे दुष्ट शासक भी हमारी संस्कृति को बदल नहीं पाए। अकबर जैसे शासकों ने हमारे संस्कृति धर्म की सराहना की और किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाई। हमारी

संस्कृति हमें 'अतिथि देवो भवः' का पाठ पढ़ाती हैं। उसका मतलब है कि अतिथि भगवान के समान हैं। इसलिए भारतीय संस्कृति ने हर संस्कृति का दिल खोलकर स्वागत और सम्मान किया है।

" सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिददुह्ख भाग्भवेत।।

अर्थात् विश्व के लोग सुखी रहें, उनका कल्याण हो, सभी लोग निरोग रहें। अतः सभी लोग एक–दूसरे का सम्मान से स्वागत करें।

कैडेट 4085 आशुतोष कुमार,
कक्षा– बारहवीं, सदन– नालंदा,
(अंतर सदनीय वरिष्ठ वर्गीय
हिंदी निबंध प्रतियोगीता में प्रथम स्थान)

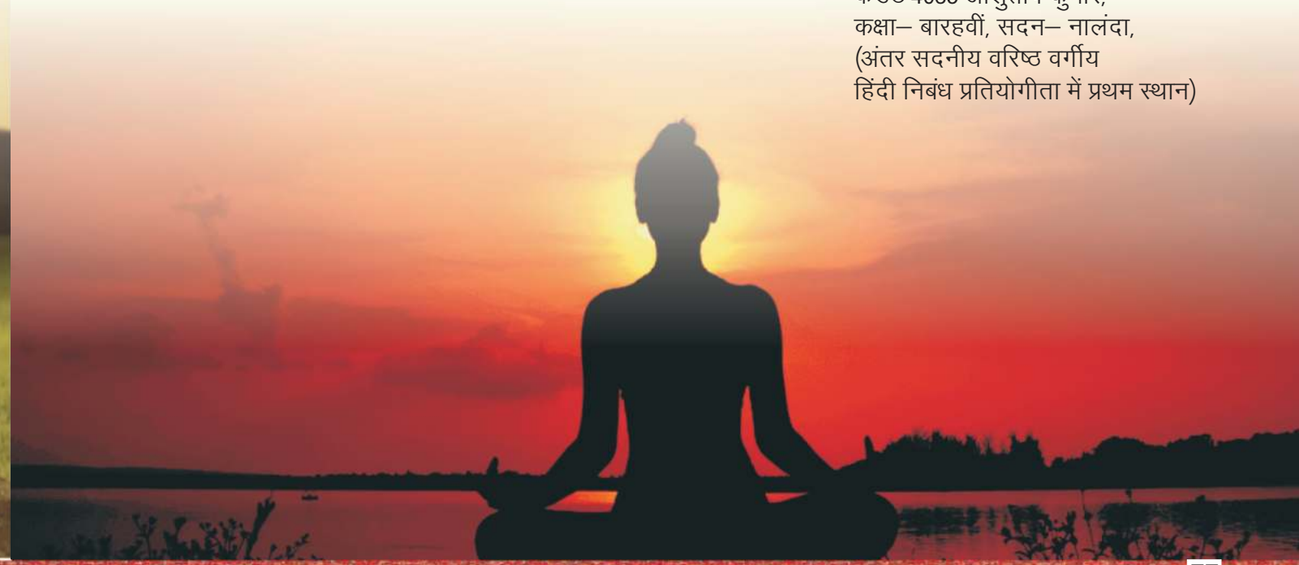

माँ

घुटनों से रेंगते – रेंगते,
कब पैरों पर खड़ा हुआ,
तेरी ममता की छाँव में,
जाने कब बड़ा हुआ–––
काला टीका दूध मलाई,
आज भी सब कुछ वैसा है।
मैं ही मैं हूँ, हर जगह,
माँ प्यार ये तेरा कैसा है?
सीधा–सीधा, भोला–भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ,
"माँ ! मैं आज भी तेरा बच्चा हूँ –––

कैडेट 4354 योगेश
सदन नालंदा
कक्षा – आठवीं

प्यारे पक्षी

जितने सुंदर, उतने प्यारे,
पंछी आकाश के कितने न्यारे
कोयल मीठे गीत सुनाए,
चिड़िया रानी चहचहाए।
मोर नाचता है उपवन में,
तोता उड़ता नीले गगन में।
भोला– भाला लगे कबूतर,
पेड़ पर बैठा काला तीतर।
कौआ करता है कांव–कांव,
रोटी ले फिरता गाँव गाँव।
कुदरत के सब राजदुलारे,
जितने सुंदर उतने प्यारे।

कैडेट– 4456 पंकज मीना
सदन तक्षशिला
कक्षा– सातवीं

रसगुल्ले

1. गुरुजी – गृहकार्य क्यों नहीं किया?
छात्र – गुरुजी, मैं पढ़ने बैठा तो बिजली चली गई
गुरुजी – बिजली आने के बाद गृहकार्य क्यों नहीं किया?
छात्र – गुरुजी, बाद में मैं इस डर से पढ़ने नहीं बैठा कि कहीं मेरी वजह से बिजली फिर से नहीं चली जाए
2. लड़का – मम्मी क्या मैं भगवान की तरह दिखता हूँ?
मम्मी – ऐसा क्यों पूछ रहे हो बेटा !
लड़का – क्योंकि में जहाँ कहीं भी जाता हूँ, तो सभी बोलते है फिर आ गया भगवान !

कैडेट – 4462 सुमित
तक्षशिला सदन
कक्षा सातवीं

जिंदगी

छोटी सी है जिंदगी
हर बात में खुश रहो–––––
जो चेहरा पास न हो,
उसकी आवाज में खुश रहो –––––
कोई रूठा हो आपसे,
उसके अंदाज में खुश रहो –––––
जो लौट के नहीं आने वाले,
उनकी याद में खुश रहो –––––
कल किसने देखा है,
अपने आज में खुश रहो –––।

कैडेट– 4319 निखिल प्रताप सिंह
कक्षा नवीं,
सदन नालंदा,

महामारी कारण व निवारण

जब किसी रोग का प्रकोप कुछ समय पहले की अपेक्षा बहुत अधिक हो जाता है तो उसे महामारी कहते हैं। जैसे प्लेग, हैजा, और कोरोना आदि।

आजकल कोरोना वायरस का संक्रमण बहुत अधिक बढ़ गया है। यह एक ऐसा संक्रमण है, जिसमें व्यक्ति को सर्दी–जुकाम और साँस लेने जैसी समस्या हो जाती है। यदि कोई व्यक्ति कोरोना से प्रभावित है, तो यह वायरस उस व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में बहुत जल्दी फैलता है। इसलिए इससे बचने के लिए सामाजिक दूरी का पालन आति आवश्यक है। यही कारण है कि पूरे देश को लॉकडाउन किया गया।

इस महामारी के फैलने के मुख्य कारणों में हम भी एक है। यह महामारी मुख्य रूप से जानवरों द्वारा फैलाती है। कोरोना वायरस उस स्थिति में भी फैल सकता है, जब लोग कोरोना वायरस से पीड़ित जानवरों का मास भोजन के रूप में सेवन करें। इस प्रकार लोगों को इस महामारी के दौरान माँस का सेवन नहीं करने की सलाह दी जाती है।

इस महामारी के फैलने के और भी कई कारण है, खाँसते या छींकते समय मुँह पर कपड़ा न रखने से, कोरोना वायरस से संक्रमित लोगों से हाथ मिलाने से, माँसाहारी भोजन करने से, कोरोना संक्रमित व्यक्ति को छूने से भी यह कोरोना वायरस फैल सकता है।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए, इस महामारी के प्रकोप को कम करने के लिए भारत सरकार ने कई उचित कदम भी उठाए हैं। जैसे देशभर में कई बायो लैब बनाई जा रही हैं, जो लोगों की जाँच करेंगी, वही विदेश से आ रहे लोगों की एयरपोर्ट पर जाँच हो रही है। भारत से विदेश जाने वाली पैरासिटामोल, विटामिन बी–12 , विटामिन बी–6, विटामिन बी–1 जैसी कुछ दवाइयों के निर्यात पर कुछ समय के लिए रोक लगा दी गई है। ताकि भारत में इस तरह की दवाइयों की कोई कमी न आने पाए। चीन, इटली, जापान, इरान और साउथ कोरिया के यात्रियों के वीजा पर कुछ समय के लिए रोक लगा दी गई है। भारतीय नागरिकों को भी इन देशों की यात्रा करने से सतर्क रखा गया है, इसके अलावा कई देशों को वीजा ऑन लाइन की सुविधा पर रोक लगा दी है और लंबी प्रक्रिया के बाद ही वीजा दिया जा रहा है। सबसे प्रमुख बात तो यह है कि देशभर में कई बार बंदी भी लगाई गई है। जिसमें लोगों का बाहर धूमना सख्त मना था। हाँलाकि कोरोना वायरस के कारण काफी सारे लोगों को अपनी जिंदगी से हाथ धोना पड़ता है। लेकिन यदि थोड़ी सावधानी बरती जाए तो लोगों की जिंदगी को बचाया जा सकता है। जैसे– हाथों को अच्छी तरह से धोना, बीमार लोगों से दूरी बनाए रखना, खाँसते या छींकते समय मुँह को ढकना, उचित अंतराल पर स्वास्थ्य की जाँच कराते रहना आदि कई सावधानियों का पालन करने से हम कोरोना वायरस से बच सकते हैं। चूँकि लोगों में कोरोना वायरस की पूरी जानकारी नहीं है। इसी कारण वे इसके लक्षणों की पहचान नहीं कर पाते हैं। कोरोना वायरस की पहचान सही समय पर न करने के कारण ही लोगों को काफी सारी परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

अतः लोगों में इस वायरस को लेकर जागरुकता को बढ़ाना काफी जरूरी है ताकि वे इससे सुरक्षित रह सकें और दूसरों को भी सुरक्षित रख सके।

कैडेट 4156 प्रिंस कुमार

मैं भारत का सैनिक हूँ।

मैं, भारत का एक सैनिक हूँ,
मेरा भी एक परिवार है।
कैसे परिवार को याद करूँ,
जब तक हाथों में हथियार है।
जब घर की याद आती है,
मैं, देश प्रेम में भूल जाता हूँ।
माँ स्वादिष्ट खाना बनाती है,
पर मैं, तो सीने पर गोली खाता हूँ।
आनंदमय यह त्यौहार है,
जो मैं, खुद ही मनाना चाहता हूँ।
खुद चाहे मैं, मिट जाऊँ,
पर देश बचाना चाहता हूँ।
मैं, डरता नहीं मौत से
जब सामने दुश्मन आता है।
मैं, घर नहीं जाना चाहता
क्योंकि देश मुझे बुलाता है।
मैं, देश की रक्षा करता हूँ,
माँ बाप का अकेला सहारा हूँ।
लोग मुझे फौजी कहते हैं,
मैं, तो आजादी का मतवाला हूँ।
जब घर की याद आती है,
मैं, चिट्ठी का इतंजार करता हूँ।
मैं, खुद से प्यार करूं न – करूं
मैं, खुद तिरंगे से प्यार करता हूँ।

कैडेट 4373 प्रियांशु यादव
कक्षा आठवीं,
सदन उज्जैन,

शिक्षकों को नमन

जब पहला पग पड़ा विद्यालय में,
तब मैं कोरा पन्ना था।
हाँ शिक्षा ग्रहण कर के,
मुझे भी अच्छा इंसान बनना था।
हाँ साथ दिया मेरे शिक्षकों ने,
और सिखाई हर नई बात मुझे।
उनके लिए कुछ पंक्तियों से,
करूँगा नमन, मैं आज उन्हें।
आपके उपकारों को ये अध्यापक,
हम जीवन भर ना भूलेंगे ।। 2 ।।
बहुत याद आएगी तुम्हारी,
जब कामयाबी का झूला हम झूलेंगे।
दृढ़ संकल्प लेना सिखाते हो,
अच्छे संस्कारों का महत्त्व बताते हो।
भूले भटके राही को भी,
सफलता का मार्ग दिखाते हो।। 2।।
नजर सब पर एक समान हो,
ना शिष्यों में भेदभाव करते हो।। 2।।
यदि किसी नादान से गलती हो जाए,
तो उसे सीख देकर माफ करते हो।
चाहें सफलता के शिखर पर चढ़ जाए,
या धन का भंडार लग जाए।। 2।।
लेकिन अगर कभी उनसे मुलाकात हो,
तो यह आँखें इज्जत से झुक जाएँ।
किसी अध्यापक के मुख पर मुस्कान लाना,
परिणाम के अंकों से ज्यादा है।। 2।।
कभी अपने व्यवहार से उनका दिल नहीं दुखाएंगे,
यह करना खुद से वादा है।
बहुत – सी कठिनाइयों के बाद भी,
अध्यापक हमें पढ़ाते हैं ।। 2।।
स्कूली शिक्षा के साथ–साथ ,
हमारा सामाजिक ज्ञान भी बढ़ाते हैं।
यह, वह पुष्प है,
जो पूरे बगीचे को महकाते हैं।। 2।।
यह उस पेड़ की डाल हैं,
जिसपर हजारों पक्षी चहचहाते हैं।
हम अज्ञानी कतरों को,
शिक्षा के सागर में मिलाते हैं।। 2।।
यह अध्यापक ही तो हैं,
जो संघर्षी प्यासों को सफलता का अमृत पिलाते हैं।
मैं, धन्यवाद करता हूँ, हर शिक्षक को ।। 2।।
सचमुच यह शिक्षक महान है,
इस देश को सशक्त बनाने में,
आप का सबसे अधिक योगदान है ।। 2।।

कैडेट – 4348 रोहन कुमार,
कक्षा – आठवी
सदन – उज्जैन

मैं लड़की हूँ

मैं लड़की हूँ, तो नाजुक ही क्यों?
मैं लड़की हूँ, तो गुलाबी रंग ही क्यों?
मैं लड़की हूँ, तो बेवकूफ ही क्यों?
मैं लड़की हूँ, तो बेसहारा ही क्यों?
क्यों? मेरा जीना गुनाह है।
क्यों मेरा पढ़ जाना गुनाह है।
क्यों मेरा घर से बाहर जाना गुनाह है।
क्यों? मेरा पैसा कमाना गुनाह है।
मैं लड़की हूँ तो ज्यादा बोल नहीं सकती।
मैं लड़की हूँ तो ज्यादा हँस नहीं सकती।
मैं लड़की हूँ तो क्या पढ़ नहीं सकती?
मैं लड़की हूँ तो क्या लड़ नहीं सकती?
क्या मेरे मन में दुःख दर्द और पीड़ा नहीं है,
क्या मेरे मन में भावनाएँ नहीं है,
क्या मेरे मन में कहने को कुछ बातें नहीं हैं।
क्या मेरे ही मन में मेरे लिए कुछ जगह नहीं है।
अब मैं क्या ही करूँ किससे अपनी भावनाएँ जाहिर करूँ,
कोई मुझ को तो बता दे किससे अपने मन की बातें कहूँ?
मैं किसको अपने दुःख दर्द और पीड़ा सुनाने के लायक समझूँ?
इस अनजान दुनिया में किसको अपना–सा समझूँ?
मुझमें है गुस्सा है रूतबा है जज्बा ,
मैं लेकर ही रहूँगी इस दुनिया में अपना एक दर्जा।
मुझको रोककर दिखाए,
मैं अब न रुकूँगी चाहे कोई भी आ जाए।

कैडेट रिध्दिमा ठाकुर
कक्षा– नवीं,
सदन –उज्जैन

RMS CHAIL IN NEWS

Gangwal takes charge as principal of RMS, Chail

Vimal Kumar Gangwal has taken charge as principal of Rashtriya Military School, Chail. It is the oldest military school in Asia, established in the year 1925. The school in Chail is the oldest institution amongst the five sister schools, the others being located at Ajmer, Belgaum, Banglore, and Dholpur. Gangwal was appointed as Master Gazetted through the Union Public Service Commission at Rashtriya Military School, Ajmer in 1997. He also performed the onerous task of Master in Charge Education at Rashtriya Military School, Chail from 2013 to 2019. His advent as the new principal is a focal step towards the overall advancement of the illustrious institution.

The Tribune | CHANDIGARH | SATURDAY | 3 DECEMBER 2022 | 03

Saurav bags President's silver medal

SHIMLA, DECEMBER 2

Saurav Sharma, an alumnus of Rashtriya Military School, Chail in Solan district, has been awarded the President's silver medal at the 143rd course of the National Defence Academy, Pune.

Chief guest Admiral R Hari Kumar, Chief of the Naval Staff, Indian Navy, honoured Sharma with the silver medal. Seven alumni of the Chail school — Saurav, Lankesh Yadav, Nikhil Kumar, Bhragu Rathi, Naveen Poonia, Rohit Chauhan and Rohit Kumar — completed the course. —TNS

दिव्य हिमाचल
शिमला, शनिवार, 3 दिसंबर, 2022

चायल स्कूल के छात्र को राष्ट्रपति रजत पदक

नवीन कुमार-चायल

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी पुणे के 143वें कोर्स में राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल चायल के छात्र सौरव कुमार को संपूर्ण कोर्स में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने पर राष्ट्रपति रजत पदक से सम्मानित किया गया है। मुख्य अतिथि भारतीय नौसेना अध्यक्ष एडमिरल आर हरिकुमार पीवीएसएम, एवीएसएम, वीएसएम, द्वारा सौरव को राष्ट्रपति रजत पदक से सम्मानित किया गया। इसी कोर्स में कैडेट सौरव सहित सात छात्रों कैडेट लंकेश, निखिल, भृगु राठी, नवीन, रोहित एवं कैडेट रोहित ने कोर्स को सफलता पूर्वक पूरा करके संपूर्ण विद्यालय परिवार को गौरवान्वित किया है। भारतीय सेना में अधिकारी बनने के लिए कैडेट रोहित कुमार वायु सेना अकादमी हैदराबाद में अपना प्रशिक्षण पूरा करेंगे एवं शेष सभी कैडेट इंडियन मिलिट्री अकादमी देहरादून में प्रवेश लेकर प्रशिक्षण पूरा करेंगे। एमडीएम

The Tribune
24 NOVEMBER 2022

EDUCATION NOTES

ANNUAL DAY AT CHAIL MILITARY SCHOOL

Rashtriya Military School, Chail, celebrated its 97th Annual Prize Giving Day on Tuesday. Col Shyam Kumar Bhakuni, Commanding Officer, Sub Area Provost Unit, Ambala, was the chief guest. The other guests included Col GS Training, Col Adt Saxena and alumni of the school, besides parents of the students. The chief guest encouraged the cadets to work hard, inculcate discipline and lead by example.

Cadet Naaz Manhas of the Ujjain house was declared the best cadet in sports and Cadet Mukul of the Taxila house clinched the trophy for the highest average performance in academics.

Cadet Hemender and Cadet Ashutosh Kumar of the Nalanda house won the best house captain and the all-round best cadet trophy for the session. The Ujjain house won the all-round best house cup while Nalanda House won the all-round runners-up shield.

बुधवार, 23 नवंबर, 2022
दिव्य हिमाचल

राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल चायल के होनहारों पर बरसे इनाम

सालाना समारोह के दौरान मिला सम्मान, कर्नल श्याम कुमार भागुनी और कर्नल आदित्य सक्सेना ने की बतौर मुख्यातिथि शिरकत

नवीन कुमार-चायल

राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल चायल में 97वां वार्षिकोत्सव समारोह संपन्न हुआ। जिसके मुख्यातिथि कर्नल श्याम कुमार भागुनी कमान अधिकारी सब एरिया प्रोविस यूनिट अंबाला तथा कर्नल आदित्य सक्सेना जीएसटी सब एरिया अंबाला रहे। वार्षिकोत्सव को समारोह स्कूल के प्राचार्य [illegible] गंगवाल जैन के मार्गदर्शन के अनुसार किया गया। मेजर [illegible] सिंह प्रशासनिक अधिकारी ने इस अवसर पर सभी कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक संचालन किया। वार्षिकोत्सव समारोह में मुख्य अतिथि ने अकादमिक वर्ष 2022-2023 में आयोजित सभी शैक्षणिक खेलकूद और शैक्षणिक गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विजेता छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया। जिसमें उज्जैन, नालंदा और तक्षशिला सदन ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस वर्ष 2022-2023 के सर्वश्रेष्ठ कक्षा एवं विषय के आधार पर कई छात्रों को पुरस्कृत किया गया। कक्षा सातवीं से कैडेट मयंक भारत और [illegible], कक्षा आठवीं कैडेट विक्रम राज और अक्षत आशीष कक्षा नौवीं कैडेट शालिक वर्मा और राज सिंह कक्षा दसवीं को कैडेट वीर प्रताप सिंह और प्रेमराज कक्षा ग्यारहवीं कैडेट वत्सल और हर्ष कुमार कक्षा बारहवीं कैडेट आशुतोष कुमार और सतीश कुमार विजेताओं को चलवैजंती पुरस्कार एवं विजय चिन्ह प्रदान किया गया। मेजर जनरल डॉ. अशोक कुमार गुप्ता वीएसएम खेलकूद चल वैजंती पुरस्कार नाज मन्हास को मिला। डा. [illegible] कुमार शर्मा एमडी अकादमिक चल वैजंती पुरस्कार कक्षा छठवीं से लेकर कक्षा बारहवीं तक उन्नति के आधार पर मुकुल कुमार को मिला। लेफ्टिनेंट कमांडिंग स्वर्ण [illegible] जयंती पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ सदन कप्तान हेमेंद्र सिंह को मिला। सर्वश्रेष्ठ वेशभूषा के आधार पर सर्व रैंक मुख्यालय जालंधर सब एरिया का पुरस्कार उज्जैन सदन को मिला। लेफ्टिनेंट जनरल [illegible] सिंह सिख रेजीमेंट के कर्नल के प्रति [illegible] चलवैजंती पुरस्कार सर्वश्रेष्ठ अनुशासन के लिए तक्षशिला सदन को मिला। लेफ्टिनेंट जनरल [illegible] सिंह जोशी प्रभारी पश्चिम कमांड के प्रति [illegible] सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार उज्जैन सदन को मिला। ब्रिगेडियर [illegible] सर्व रैंक संस्था के द्वारा सर्वश्रेष्ठ खेलकूद वैजंती पुरस्कार [illegible] सदन को मिला। जीओसी मुख्यालय पंजाब हरियाणा और हिमाचल प्रदेश सब एरिया संस्था पुरस्कार सर्वाधिक [illegible] का पुरस्कार नालंदा सदन ने प्राप्त किया। वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्यातिथि ने कहा कि अथक परिश्रम एकाग्रता और अनुशासन से ही व्यक्ति अपने लक्ष्य तक पहुंच सकता है। वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह के पश्चात विद्यार्थियों ने विभिन्न शानदार सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। छात्रों के द्वारा प्रस्तुत की गई [illegible] तथा छात्राओं द्वारा प्रस्तुत की गई सरस्वती वंदना एवं लोक नृत्य की प्रस्तुतियों ने खूब तालियां बटोरी। (एमडीएम)

DISTINGUISHED VISITORS

Date	Name	Address	Remarks	Sign
02 May 22	Col Adit Saxena	COE Trg HQ PH & HP (I) Sub Area	Familiarisation visit to the school. Keep up the good work. Thanks. [signature]	
28 Apr '23	Maj Gen Sanjay Maini	GOC, HQ, PH & HP (I) Sub A	On my maiden visit to the famous cradle of leadership, the RMS, Chail. It is more than what I had imagined the institution to be. The spirit, enthusiasm and the "Josh" of the students, and faculty led ably by the Principal is infectious. Their contribution towards nation building is outstanding. My best wishes to the school for all its endeavours. Good luck and God speed. Jai Hind. [signature] 28 Apr '23	